प्राकृत-समय

डॉ. ज्योतिबाबू जैन

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थांक 95

ISBN978-93-90659-49-4

प्राकृत-समय

(प्राकृत विद्या : आधुनिक संदर्भ में)

(शोध)

संपादक : डॉ. ज्योतिबाबू जैन

प्रकाशक : **भारतीय ज्ञानपीठ**
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली-110003

© डॉ. ज्योतिबाबू जैन

PRAKRIT-SAMAYA
(Reserach)
By Dr. Jyotibabu Jain

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003
Ph. : 011-24626467; 23241619 (Daryaganj)
Mob. : 9350536020; e-mail : bjnanpith@gmail.com
sales@jnanpith.net; website : www.jnanpith.net

First Edition : 2022
Price Rs. 600

अनुक्रम

संपादकीय -डॉ ज्योतिबाबू जैन
प्ररोचना- प्रो.सुदीप कुमार जैन

1. प्राकृत-काव्यों की मौलिक रमणीयता - प्रो.दामोदर शास्त्री/ 27
2. प्राकृत साहित्य में योग और ध्यान की परंपरा
- प्रो.भागचंद जैन भास्कर/ 34
3. प्राकृत-अध्ययन की उपयोगिता - प्रो.प्रेम सुमन जैन/47
4. प्राकृत साहित्य की परंपरा और उसकी विधाएं - प्रो.उदयचंद्र जैन/57
5. Importance of prakrit scriptures in modern times for our happiness - Dr.P.M Agrawal/ 66
6. प्राकृत पालि गाथाओं में साम्य - प्रो.धर्म चन्द्र जैन/ 76
7. आयुर्वेद में प्राकृत और संस्कृत की उपयोगिता - प्रो.ऋषभचंद जैन/ 85
8. प्राकृत आगमों में विज्ञान - प्रो. एन.एल.कछारा / 103
9. प्राकृत वाङ्मय में समत्व दृष्टि - प्रो.अशोक कुमार जैन/ 110
10. प्राकृत परम्परा के आचार्यो की समकालीन -युगचेतना
- प्रो.वीर सागर जैन/ 118
11. प्राकृत-सूक्तियों में लोकमंगल भावना - डॉ.रांका जैन/ 124
12. भारतीय साहित्य को प्राकृत का योगदान - डॉ.कमल कुमार जैन/ 130
13. प्राकृत शिलालेखों में समसामयिकता - डॉ.दिलीपधींग/ 145
14. प्राकृत आगमों के शैक्षिक संदर्भ - प्रो.जिनेंद्र कुमार जैन / 149
15. प्राकृतभाषा और आधुनिक संचार-माध्यम - प्रो.अनेकांत जैन/158
16. प्राकृत-काव्यों की समरसता - प्रो.जयकुमार उपाध्ये/ 166
17. आगमों में अंकित आचार-संहिता और पर्यावरण सुरक्षा - डॉ.अनिल कुमार जैन/174

18. प्राकृत आगमों में कषाय-विजय के उपाय - डॉ.ज्योति बाबू जैन/ 188
19. जैन आगम और वर्तमान कृषि-पद्धति - डॉ.श्याम लाल गोदावत/ 194
20. प्राकृतभाषा जनकल्याणी - डॉ.सुमत कुमार जैन/ 202
21. प्राकृत भाषा का जैन-पत्रकारिता के विकास में योगदान
- डॉ.धर्मेंद्र कुमार जैन/ 217
22. प्राकृत-साहित्य में शैक्षिक निहितार्थ - डॉ.शुद्धात्मप्रकाश जैन/ 221
23. प्राकृत-वाङ्मय में आध्यात्मिक-विकास के सोपान
- प्रो.डॉ. अनिल कुमार जैन/ 231
24. प्राकृत-सूक्तियों की समसामयिकता - प्रो.कल्पना जैन/ 245
25. प्राकृत-साहित्य में ध्यान और उसकी उपयोगिता - डॉ. सत्यनारायण शर्मा/251
26. प्राकृत के आधुनिक-चिंतक - डॉ.आशीष जैन/ 268
27. प्राकृत मंत्रों एवं स्तोत्रों का जीवन पर प्रभाव - प्रो.महावीर शास्त्री/ 290
28. प्राकृत में सट्टक-परंपरा एवं उसकी प्रासंगिकता - डॉ.पत्रिका जैन/ 305
29. विज्जावसुसावयायारो में अतिचारों की सामाजिक-स्थिति- डॉ.आनंद कुमार जैन / 313
30. प्राकृत-साहित्य में अंकित अचौर्यव्रत की महत्ता
- डॉ.आलोक कुमार/ 319
31. प्राकृत चरित-ग्रंथों का वैभव एवं उपयोगिता - डॉ. माधुरी शास्त्री/ 325
32. गुजराती मध्यकालीन साहित्य पर प्राकृत का प्रभाव
- प्रो. सलोनी जोशी/ 340
33. नम्मयासुंदरी कहा में स्त्री शिक्षा- डॉ. वंदना चौधरी/ 344
34. कर्म-सिद्धांत और मानसिक-शांति - डॉ.वीरचन्द्र जैन/ 350